अभिव्यक्ति

7th Issue

CSIR-Central Building Research Institute, Roorkee (UK)

सम्पादकीय

मित्रो, हम आपके सम्मुख लेकर आये हैं ***"अभिव्यक्ति"*** का एक नया अंक जो कि भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पर केन्द्रित है। इस वर्ष पूरे देश में इस विषय को लेकर अनेकानेक कार्यक्रम हो रहे हैं। हमारा मौजूदा अंक हमारे सदाबहार फिल्म जगत को समर्पित है। इसी वर्ष सिने जगत के महान कलाकार प्राण साहब को ***"दादा साहब फाळके"*** पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। ***अभिव्यक्ति*** परिवार की ओर से प्राण साहब को हार्दिक बधाई।

दहन, उत्सब, चोखेर बाली, असुख, बारीवली, अंतरमहल और रेनकोट जैसी शानदार फिल्मों के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित ऋतुपर्णो घोष का ३० जून की सुबह निधन हो गया। वह मात्र 49 साल के थे और पैंक्रियास की बीमारी से ग्रसित थे और लंबे अरसे से बीमार चल रहे थे। पूरे अभिव्यक्ति परिवार की और से उन्हे भावभीनी श्रद्धांजलि, ईश्वर उनकी आत्मा की शांति प्रदान करें।

चन्द दिनों पूर्व ही क्रिकेट की आई पी एल स्पर्धा समाप्त हुई है, किंतु सट्टाबाजारियों ने इस का मजा खराब कर दिया। पैसे के लोभ में बिकते खिलाडियों ने इस खेल को बदनाम कर दिया। एक बार फिर यह कहावत सच साबित हुई "बाप बडा ना भाईय्या सबसे बडा रूपय्या"।

इस अंक से हम एक नया स्तम्भ प्रारंभ कर रहे हैं जिसे हमने नाम दिया है "कैँम्पस-बज़्ज़", जिसके माध्यम से हम अनुसन्धान व आवासीय परिसर की कुछ चुटीली और चटपटी बातों से आपको रुबरु करायेंगे। "कैँम्पस-बज़्ज़" पर आपकी प्रतिक्रियाओं का हमें इंतजार रहेगा। हमेशा की तरह मेरा आप सभी से एक बार पुनः अनुरोध है की **अभिव्यक्ति** को अपनी प्रतिभाओं को व्यक्त करने का माध्यम बनायें।

प्रदीप चौहान

मुख्य सम्पादक "***अभिव्यक्ति***"

स्मृति

पश्चिमी उत्तरप्रदेश के साहित्य की चर्चा डा. योगेश छिब्बर का नाम लिए बिना अधूरी है। कई देशी-विदेशी भाषाओं के ज्ञाता होने के साथ - साथ उन्होने हिंदी भाषा व साहित्य को अप्रतिम योगदान दिया । पिछले अनेक वर्षों से प्रेम और अध्यात्म को केन्द्र में रखते हुए दोहे, टप्पे, ग़ज़ल और क्षणिकायें लिखते-गाते चले आ रहे हैं। डा. योगेश छिब्बर की कविता अम्मा ने दुनियां भर में कहां - कहां धूम नहीं मचाई ! छिब्बर सर के सुर में सुर मिलाते हुए पचासियों लोगों ने इस कविता को आगे बढ़ाते हुए अपनी अपनी अम्मा के प्रति अपनी भावनाओं को 'द सहारनपुर डाट काम' पर अभिव्यक्ति दी तो एक सृजनात्मक आंदोलन खड़ा हो गया था।

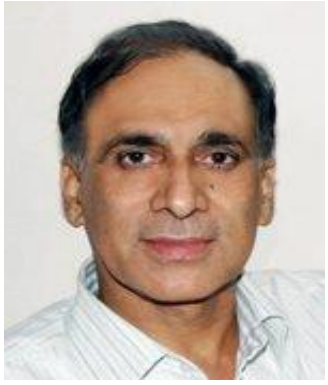

नगर एवं नगर के बाहर वे कला, साहित्य एवं संस्कृति के संवाहक के रूप में जाने जाते थे । हिन्दी काव्य साहित्य में लुप्तप्राय हो रही दोहा, टप्पा जैसी कठिन विधाओं को सहजता एवं सरसता से जन-जन तक पहुंचाने में आप सफल रहे हैं। पर अचानक एक शाम; काल के क्रूर हाथों ने इस दुलारे कवि, लेखक, विचारक एवं महाराज सिंह कालिज के अंग्रेज़ी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. योगेश छिब्बर को हमसे छीन लिया। मदर्स डे के अवसर पर डा. योगेश छिब्बर की स्मृति में उनकी कालजयी कविता अम्मा यहां साभार प्रस्तुत है;

लेती नहीं दवाई अम्मा,
जोड़े पाई-पाई अम्मा।

दुःख थे पर्वत, राई अम्मा
हारी नहीं लड़ाई अम्मा।

इस दुनियां में सब मैले हैं
किस दुनियां से आई अम्मा।

दुनिया के सब रिश्ते ठंडे
गरमागर्म रजाई अम्मा।

बाबू जी तो तनख़ा लाये
लेकिन बरक़त लाई अम्मा।

बाबूजी थे छड़ी बेंत की
माखन और मलाई अम्मा।

बाबूजी के पांव दबा कर
सब तीरथ हो आई अम्मा।

नाम सभी हैं गुड़ से मीठे
मां जी, मैया, माई, अम्मा।

सभी साड़ियां छीज गई थीं
मगर नहीं कह पाई अम्मा।

अम्मा में से थोड़ी - थोड़ी
सबने रोज़ चुराई अम्मा।

अलग हो गये घर में चूल्हे
देती रही दुहाई अम्मा।

बाबूजी बीमार पड़े जब
साथ-साथ मुरझाई अम्मा।

रोती है लेकिन छुप-छुप कर
बड़े सब्र की जाई अम्मा।

लड़ते-सहते, लड़ते-सहते,
रह गई एक तिहाई अम्मा।

बेटी की ससुराल रहे खुश
सब ज़ेवर दे आई अम्मा।

अम्मा से घर, घर लगता है
घर में घुली, समाई अम्मा।

बेटे की कुर्सी है ऊंची,
पर उसकी ऊंचाई अम्मा।

दर्द बड़ा हो या छोटा हो
याद हमेशा आई अम्मा।

घर के शगुन सभी अम्मा से,
है घर की शहनाई अम्मा।

सभी पराये हो जाते हैं,
होती नहीं पराई अम्मा।

प्रस्तुति: सूबा सिंह

भीड़ में अकेला घूम रहा हूँ ...

भीड़ में अकेला घूम रहा हूँ ...
भीड़ में अकेला घूम रहा हूँ ...
दुःख में भी अपने झूम रहा हूँ /
कोई तो रास्ते में दिखे अपना,
कब से हमराह ढूंढ़ रहा हूँ /
यहाँ सभी अवसरवादी हैं ,
मन में कपट है और तन पे खादी है /
अपने फायदे के लिए यहाँ सभी मित्र हैं ,
पर असल में हालत बड़े विचित्र हैं /

यहाँ किसी का सुख
दूसरे के दुःख का कारण है /
और किसी और का दुःख ही
उसके दुःख का निवारण हैं /
दुःख -सुख के इन झंझावतों से
मैं भी जूझ रहा हूँ /

पेट भरतें हैं लोग यहाँ ,
दूसरों का अंश छीनकर ,
अपने अंश की सुरक्षा करना ,
मैं भी सिख रहा हूँ /
यहाँ हर मार्ग में शूल बहुत हैं पर ,
जीवन के लघु-पाषणों से ,
डरना भूल रहा हूँ /

लोगों की घनिष्ठता से
अब भय लगता है ,
क्योंकि अपना और पराया पहचानने का ,
हुनर नहीं है अभी ,
उसे भी अपने अन्दर उपजाने ,
को भी मैं जूझ रहा हूँ /

इसीलिए...मेरे प्यारे दोस्तों
भीड़ में अकेला घूम रहा हूँ ...

अब तो मैं गम में भी खुश रह लेता हूँ ,
क्योंकि अकेले ही विष का प्याला पी लेता हूँ
अतः सुख -दुःख के हिचकोले खाकर ,
जीवन झूले को झूल रहा हूँ /
और साथ ही साथ मैं उस झूले पर
स्थिर रहना भी सीख रहा हूँ /

इस जीवन मार्ग में कई मोड़ आये हैं ,
और हर मोड़ पर धोखे के अतिक्रमण को घूर रहा हूँ ,
मेरे प्यारे दोस्तों अब मैं क्या कहूं ?
कब से मैं भीड़ में अकेला घूम रहा हूँ ...
भीड़ में अकेला घूम रहा हूँ ..

- *राजेश कुमार*

I am 100 years Old and still Kicking...

- *Piyush Mohanty*

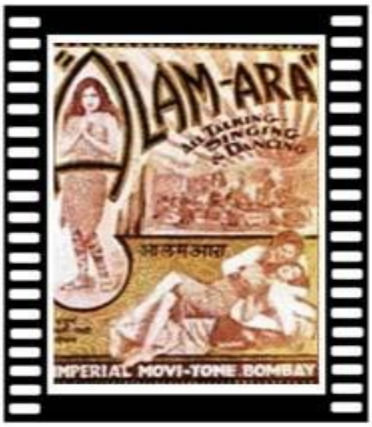

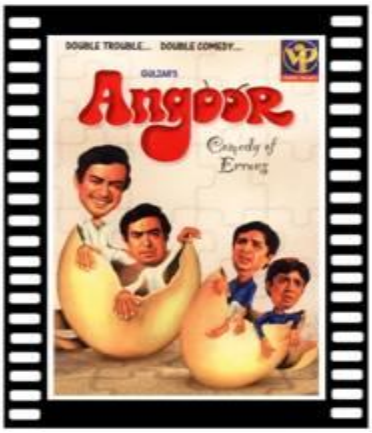

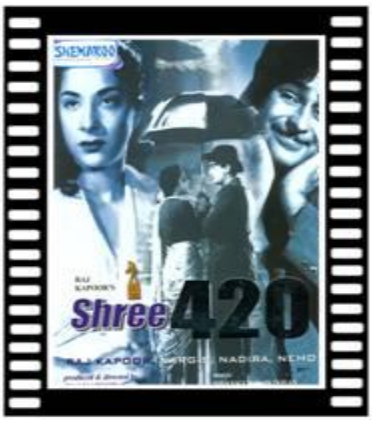

The eyes of cineaste Indian people must have been glued to the Television from May 15 to 26 to witness the glamour and surprise of *Indian Premier League*. Be it the cheerleaders, the respectable glamorous owners or the fireworks on the field the whole world cinema is going to witness the celebration of centennial of Indian Cinema, where so many movies are produced in a year than any place on the earth. These movies may be over the top and kitschy, but our cinema has never failed to whet our appetite for more and more entertainment with larger than life performances.

We are almost past a century of Our Reel World-Indian Cinema. It is almost 100 years from the time *Raja Harishchandra* was shown to audience. We have come past 100 years from the time the Indian audience first witnessed motion picture. Many directors, producers, production company, actors took to the silver screen. Some shined in front of the camera, some lost their sheen over the time. The young tried to emulate the bell bottom and hippy style from *Hare Krishna Hare Ram*, the unique smarm from *Gulaam.*

When I talk about Bollywood, I basically classify the whole gamut of movies into two kinds of movies. One of them is the Respectables, which comprises patriotic movies and the movies on social dogmas.

The other kind is the Adorables, this class consists of the romantic movies. Despite the long

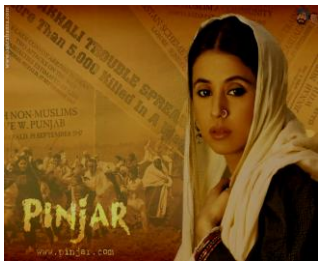

trail of classical romantic/ romantic movies over the years in Bollywood, most of them have failed to make an impression except the few ones. Some attach reasons like as Bollywood makes as almost as 300 movies a year, so most of the movies are doomed to fail as they lose quality in the race of movies. That's why the movies, which tried to portray the social issues and their solution has been a success mantra for most of the filmmakers. So people like Ashutosh Gowarikar, Mira Nair etc., who has been the torchbearers for India in most of the International Film Festivals, came out open and discussed about social dogmas through their Respectable kind of movies. I'll be briefing about some of the Respectable movies like Do Bigha Zameen, Pinjar, Water, Rang De Basanti etc, which really moved me a lot and shaped my line of thoughts.

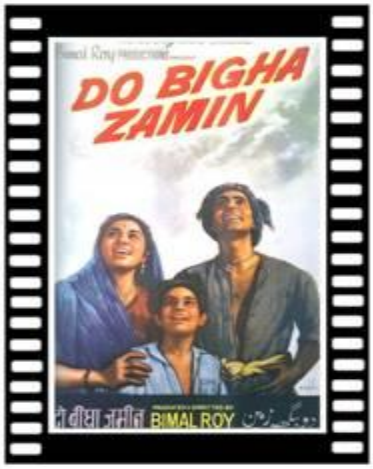

As the separation of 1947 has become a thing of the past, still the *Pinjar* refreshes the memory about the pain of the separation of India and Pakistan combined with the deplorable condition of woman in both the states. The female protagonist *Puro* played by Urmila Matondekar and the male protagonist role *Rashid* played by Manoj Bajpai bring the audience to tears unquestionably. The grief behind the riots during the separation, which compelled some of the Indians to escape to

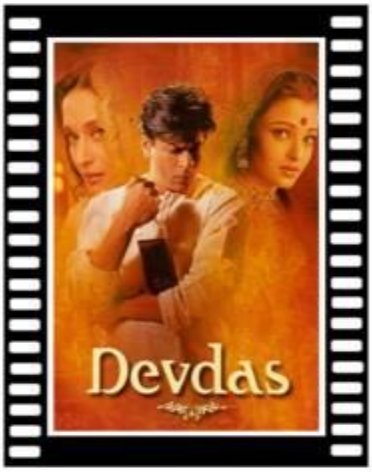

Pakistan and vice versa was aptly expressed by actors like Kulbhushan Kharbanda etc.

Similarly, the *Water* depicts a story of plight of the widows of Varanasi during English colonialism. The direction by Mira Nair on the succinct script written by none other than Anurag Kashyap really unfolded one of the sensitive issues of the social strands of that time. The movie goes on to describe how people still adhere to outmoded belief of the system being blind to the suffering of the people around.

The best memory of *Rang De Basanti* will never fail as it was one of those immaculately scripted contemporary movies. It reminds me of one of the observations of Jawaharlal Nehru where he found that the influence of cinema in India surpasses that of the books and newspapers combined. A movie like Rang De Basanti with the right amount of spirit will inspire the young to stand against the wrong. It shows how a normal citizen can take care of public concern when powerful people try to mangle the lifeline of the country.

After all, we belong to a land; where no of movies in a year sometimes surpasses the number of days in the year. Like all other popular media, movies also have greater impact on the society. So the viewers should always take a positive note out of every movie, so that we really serve to the primary intention of making a film. So also the production of a movie needs to be carefully handled, so that it does not create unnecessary chaos in the society.

भारतीय सिनेमा के युगपुरूष सत्यजीत रे

यथार्थवादी धारा की फिल्मों को नई पहचान दिलाने वाले भारतीय सिनेमा जगत मे युगपुरूष सत्यजीत रे 20वीं सदी में विश्व की महानतम फिल्मी हस्तियों में एक थे, जिन्हें सर्वोत्तम फिल्म निर्देशकों में गिना जाता है और जिन्होंने अपनी फिल्मों के जरिए भारतीय सिनेमा जगत को अंतराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाई। कोलकाता में जन्म लेने वाले सत्यजीत रे बड़े घराने से ताल्लुक रखते थे, लेकिन उनकी सोच और भावनाएं आम लोगों से जुड़ी थी। बांग्ला में उन्हें माटिर मानुष कहा जाता था। सत्यजीत रे ने अपने करियर की शुरुआत वर्ष 1943 मे ब्रिटिश एडवरटाइजमेंट कंपनी से बतौर जूनियर विजुलायजर से की थी। वर्ष 1950 मे सत्यजीत रे को लंदन जाने का मौका मिला जहां उन्होंने लगभग 99 अंग्रेजी फिल्में देख डाली। इसी दौरान उन्हें एक अंग्रेजी फिल्म 'बाइसकिल थीव्स' देखने का मौका मिला।

फिल्म की कहानी से सत्यजीत रे काफी प्रभावित हुए और उन्होंने फिल्मकार बनने का फैसला किया। उनका फिल्मी सफर वर्ष 1955 मे प्रदर्शित फिल्म 'पाथेर पांचाली' से शुरू हुआ। पाथेर पांचाली कोलकाता के सिनेमाघर मे लगभग 13 सप्ताह हाउसफुल रही। इस फिल्म को फ्रांस में प्रत्येक वर्ष होने वाली प्रतिष्ठित कांस फिल्म फेस्टिवल में बेस्ट ह्यूमन डाक्यूमेंट का विशेष पुरस्कार के साथ कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले।

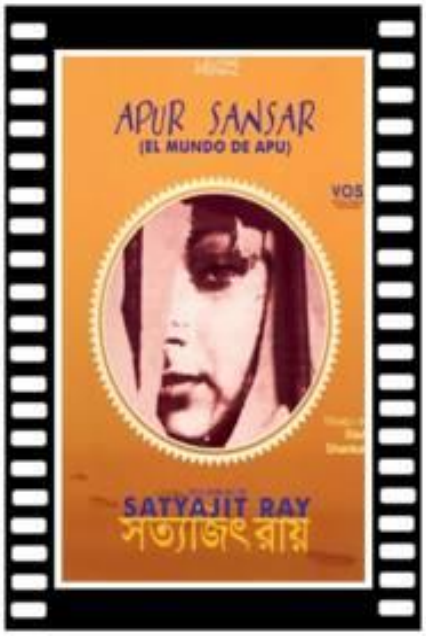

रे फिल्म निर्माण से संबंधित कई काम खुद ही करते थे। इनमें पटकथा, पार्श्व संगीत, कला निर्देशन, संपादन आदि शामिल हैं। फिल्मकार के अलावा वे कहानीकार, चित्रकार, फिल्म आलोचक भी थे। सत्यजीत रे का मानना था कि कथानक लिखना निर्देशन का अभिन्न अंग है। समीक्षकों के अनुसार सत्यजीत रे ने न केवल फिल्मों, बल्कि रेखांकन के जरिये भी अपनी रचनात्मक ऊर्जा को बखूबी अभिव्यक्त किया। बच्चों की पत्रिकाओं और पुस्तकों के लिए बनाए गए रे के रेखाचित्रों को कला समीक्षक उत्कृष्ट कला की श्रेणी में रखते हैं। रे की बाल मनोविज्ञान पर जबरदस्त पकड़ थी और इस बात का परिचय उनकी फेलूदा कहानियों की श्रृंखला में मिलता है। इस श्रृंखला की कहानियों में सरसता, रोचकता और पाठकों को बाँधकर रखने के सारे तत्व मौजूद हैं।

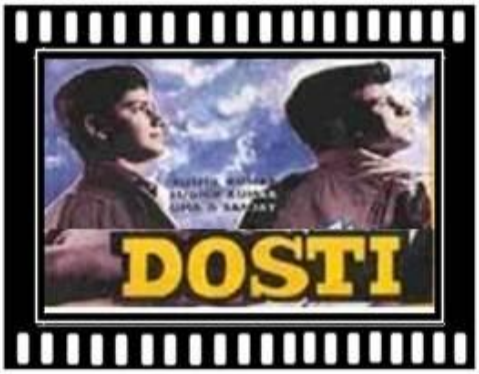

वर्ष 1977 में सत्यजीत रे के सिने करियर की पहली हिंदी फिल्म शतरंज के खिलाड़ी प्रदर्शित हुई। साल 1978 में बर्लिन फिल्म फेस्टिवल की संचालक समिति ने सत्यजीत रे को विश्व के तीन ऑल टाइम डायरेक्टर में से एक के रूप में सम्मानित किया। सत्यजीत रे को अपने चार दशक लंबे सिने करियर में काफी सम्मान मिले। उन्हें भारत सरकार की ओर से फिल्म निर्माण के क्षेत्र मे विभिन्न विधाओ के लिए 32 बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सत्यजीत रे वह दूसरे फिल्म कलाकार थे जिन्हे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा डाक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। साल 1985 में सत्यजीत रे को हिंदी फिल्म उद्योग के सर्वोच्च सम्मान दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें भारत रत्न की उपाधि से भी सम्मानित किया गया। उनके चमकदार करियर मे एक गौरवपूर्ण नया अध्याय तब जुड़ गया जब 1992 मे उनके उल्लेखनीय करियर को देखते हुए उन्हें ऑस्कर सम्मान से सम्मानित किया गया।

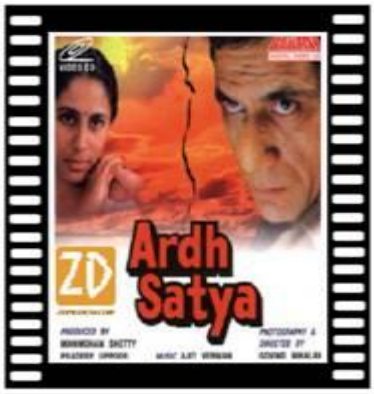

सत्यजीत रे ने अपने सिने करियर मे 37 फिल्मों का निर्देशन किया। उनके सिने करियर की कुछ अन्य उल्लेखनीय फिल्में हैं पारस पत्थर, जलसाघर, तीन कन्या, कंचनजंघा, महापुरषकापुरूष, चिड़ियाखाना, अरण्य, दिन रात्रि, प्रतिद्धंदी, सोनारकेल्ला, बाला, जय बाबा फेलुनाथ, सदगति, गणशत्रु, देवी, अपूर संसार, महानगर, चारूलता, अपराजितो, देवी नायक, गूपी गायन, बाघा बायन, घरे बाइरे आदि। वर्ष 1991 मे प्रदर्शित फिल्म आंगतुक सत्यजीत रे के सिने करियर की अंतिम फिल्म साबित हुई।

सिनेमा के पर्दे पर कई कहानियों को खूबसूरती से उतारने वाले महान फिल्मकार सत्यजीत रे की खुद की प्रेम कहानी फिल्मों की तरह थी। हालांकि रे की शादी में कई अप्रत्याशित मोड़ आए लेकिन उनकी प्रेम कहानी ने सुखद मुकाम पाया। सत्यजीत रे की पत्नी विजया ने अपनी जीवनी में इन बातों का खुलासा किया है। हाल में प्रकाशित हुई अपनी जीवनी ''माणिक एंड आई'' में दिवंगत निर्देशक की पत्नी विजया ने अपनी प्रेम कहानी के रोमांचक पहलुओं का खुलासा करते हुए लिखा है कि उन दोनों के प्रेम संबंध आठ साल तक चलते रहे। इसके बाद दोनों ने गुप्त रूप से शादी कर ली और उसके बाद अपने अपने परिवारों को मनाने के लिए योजना बनायी। विजया कहती हैं कि वह किशोरावस्था से ही रे की दोस्त थीं। लेकिन 1940 में पहली बार दोनों के बीच प्रेम की भावना अंकुरित हुई। इसके बाद वह और रे एक दूसरे के दीवाने हो गए लेकिन तब उन्हें लगा कि वह कभी भी शादी नहीं कर सकेंगे क्योंकि उनके परिवार वाले कभी उन दोनों का रिश्ता स्वीकार नहीं करेंगे।

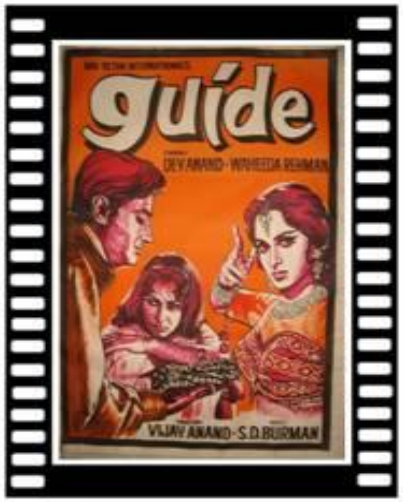

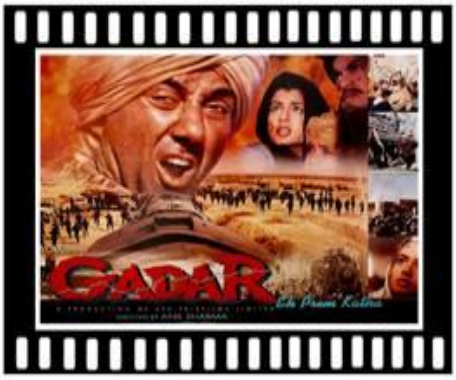

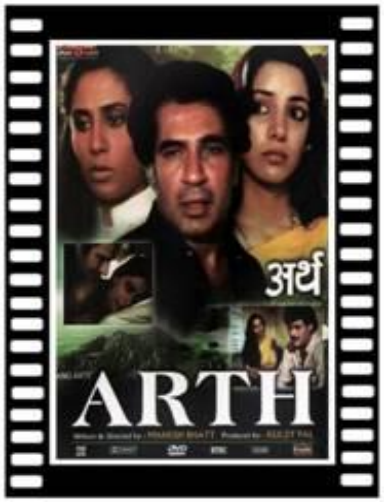

1982 में प्रकाशित सिनेएस्ट साक्षात्कार में सत्यजीत रे कहते हैं "मुझे लगता है कि मुझमें काफी पहले परिपक्वता आ गयी। मुझमें शुरू से ही ऊपर से साधारण दिखनेवाले ढांचे में गहन संदेश को सिनेमाई परदे उतारने का जुनून रहा। मैं अपनी फिल्में बनाते वक्त कभी पश्चिम के दर्शकों के बारे में नहीं सोचता। जब मैं फिल्म बना रहा होता हूं, तो सिर्फ बंगाल के दर्शक ही मेरे जेहन में होते हैं। अपनी फिल्मों के सहारे मैं उन्हें अपने साथ जोड़ने की कोशिश करता हूं, और ऐसा करते हुए मैं कामयाब भी रहा हूं। मैं वह सब कर सकता हूं, जो बर्गमैन और फेलिनी ने किया है। लेकिन मेरे पास वे दर्शक नहीं हैं और मैं उनके परिवेश में काम नहीं कर रहा हूं। मुझे उन दर्शकों से संतुष्ट रहना है, जो कूड़े का अभ्यस्त रहा है।

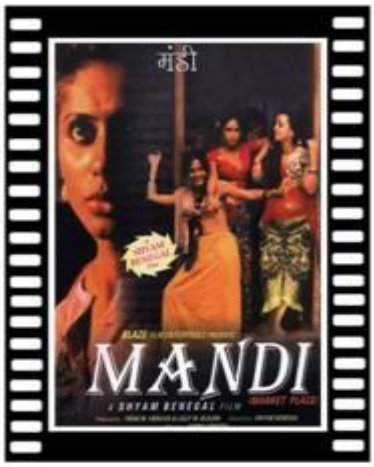

मैंने भारतीय दर्शकों के साथ तीस सालों तक काम किया है और इन वर्षों में सिनेमा का बाहरी चेहरा वैसा का वैसा रहा है। यहां आपको ऐसे निर्देशक मिल जायेंगे, जो इतने पिछड़े हैं, इतने मूर्ख किस्म के हैं, इतना कूड़ा उत्पादन कर रहे हैं कि आपके लिए यह यकीन करना नामुमकिन होगा कि उनकी फिल्मों का अस्तित्व भी मेरी फिल्मों के साथ है। मेरी परिस्थितियां ऐसी हैं कि मुझे अपनी कहानियों को हमेशा साधारण बनाये रखना होता है। हां, मैं यह जरूर कर सकता हूं कि मैं अपनी फिल्मों को अर्थवान बनाऊं, उनमें मनोवैज्ञानिक घात-प्रतिघात पैदा करूं, उनमें नये शेड्स डालूं। और इस तरह से एक 'पूर्ण' का निर्माण करूं, जो कई लोगों को कई सारी चीजें संप्रेषित करेंगी।

कुछ आलोचकों को लगता है कि मैं गरीबी को रोमांटिसाइज करता हूं, या कि मेरी फिल्मों में गरीबी और वंचितता अपने क्रूरतम रूप में प्रकट नहीं होती। मेरा मानना है कि पाथेर पंचाली गरीबी के रूपांकन में काफी कठोर है। पात्रों का व्यवहार, जिस तरह से मां एक वृद्ध औरत के साथ व्यवहार करती है, वह क्रूरतापूर्ण ही तो है। मुझे याद नहीं कि किसी ने एक परिवार में किसी वृद्ध के साथ इस तरह की क्रूरता दिखायी है।

मैंने किसी की भी तुलना में अपनी फिल्मों कहीं ज्यादा राजनीतिक टिप्पणी की है। मिडिल मैन में एक लंबा संवाद है, जिसमें एक कांग्रेसी आगे के लक्ष्यों के बारे में बात करता है। वह झूठ बोलता है, मूर्खतापूर्ण बातें करता है, लेकिन उसकी उपस्थिति महत्वपूर्ण है। किसी भी दूसरे निर्देशक की फिल्म में इस दृश्य को शामिल नहीं किया जाता। लेकिन यह जरूर है कि फिल्म निर्देशकों के ऊपर कई तरह के प्रतिबंध होते हैं। उसे मालूम होता है कि कुछ चित्रण और डायलॉग कभी भी सेंसर बोर्ड से पास नहीं होंगे। फिल्म निर्देशकों की भूमिका उदासीन द्रष्टा की नहीं है। आप हीरक राजार देशे देखिए। उसमें एक दृश्य है, जिसमें सारे गरीब लोगों को बाहर हांक दिया गया है। यहां इमरजेंसी के दौरान जो दिल्ली और दूसरे शहरों में हुआ उसका सीधा असर देखा जा सकता है। जब आप ऐसी फैंटेसी फिल्में बना रहे हों, तो आप अपनी बात सामने रख सकते हैं, लेकिन जब आप समकालीन चरित्रों के साथ खेल रहे होते हैं, तब आप एक सीमा तक ही अपनी बात रख सकते हैं।"

सत्यजीत रे की फिल्में नहीं देखने का मतलब है आपने जीवित रहकर भी सूरज-चांद के अस्तित्व को महसूस नहीं किया। हां सत्यजीत रे को आज भी एक ऐसे फिल्मकार के तौर पर याद किया जाता है जिन्होंने अपनी फिल्मों में जिंदगी की छोटी-छोटी बातों को महत्व दिया। अपनी निर्मित फिल्मों से अंतराष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले महान फिल्मकार सत्यजीत रे ने 23 अप्रैल 1992 को इस दुनिया को अलविदा कह दिया। वे दर्जनों फीचर फिल्मों के अलावा कई वृत्तचित्र और लघु फिल्में छोड़ गए हैं, जो सिनेमा के छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तक हैं।

- ***रणधीर भारत***

गुलज़ार – एक विलक्षण प्रतिभा

अगर हिन्दी सिनेमा जगत में किशोर कुमार के बाद किसी को संगीत और गाने के साथ विभिन्न और सफल प्रयोग करने के लिए जाना जाता है तो वह हैं कवि गुलजार। भारतीय सिनेमा में गुलज़ार ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। गीतकार से लेकर, पटकथा लेखन, संवाद लेखन और फिल्म निर्देशन तक के अपने लंबे स़फर में उन्होंने शानदार कामयाबी हासिल की। मृदुभाषी और सादगी पसंद गुलज़ार का व्यक्तित्व उनके लेखन में साफ झलकता है। गुलजार ने हिन्दी सिनेमा को हमेशा ही अपने गीतों और लेखों से गुलजार किया है।

गुलजार का जन्म पाकिस्तान के झेलम जिले के दीना गांव में 18 अगस्त, 1936 को हुआ था. उनके बचपन का नाम संपूरण सिंह कालरा था। साल 1947 में विभाजन के बाद उनका परिवार अमृतसर चला आया। अपने सपने पूरे करने वह मायानगरी पहुंचे. शुरुआती दिनों में उन्हें काफी स्ट्रगल करना पड़ा और जिंदगी की गाड़ी चलाने के लिए मोटर गैराज में एक मैकेनिक की नौकरी भी करनी पड़ी। प्रोग्रेसिव रायटर्स एसोसिएशन (पीडब्ल्यूए) से जुड़ने के बाद गुलजार को अपने सपने पूरे होते दिखे। संयोग से उन्हें बिमल राय प्रोडक्शंस में जगह मिल गई। वे बिमल दा के असिस्टेंट बन गए। वहीं रह कर उन्होंने फिल्म बंदिनी के लिए पहला गीत लिखा, **मोरा गोरा रंग लई ले, मोहे श्याम रंग दई दे...** हालांकि फिल्म 'काबुली वाला' बंदिनी से पहले ही

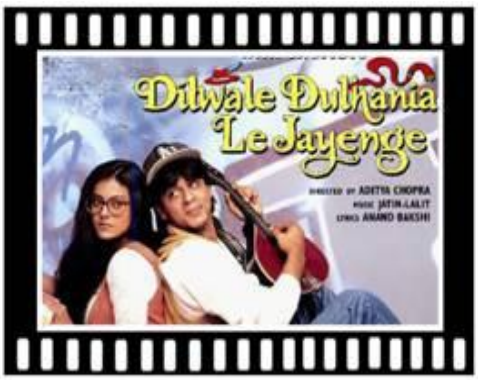

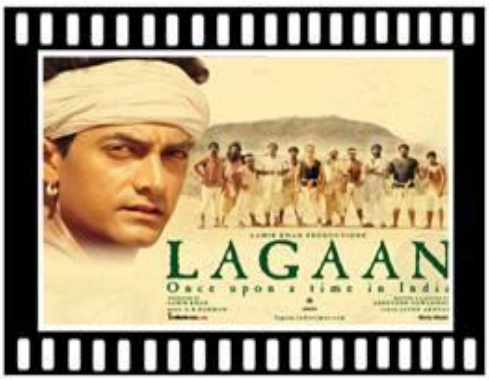

प्रदर्शित हो गई, जिसमें उनके लिखे गाने **'ऐ मेरे प्यारे वतन'** और **'गंगा आए कहाँ से'** आज भी ऑल टाइम्स ग्रेटेस्ट सांग के रूप में याद किए जाते हैं.बतौर निर्देशक गुलज़ार ने 1971 में **मेरे अपने**, 1972 में **परिचय** और **कोशिश**, 1973 में **अचानक**, 1974 में **खुशबू**, 1975 में **आंधी**, 1976 में **मौसम**, 1977 में **किनारा**, 1978 में **किताब**, 1980 में **अंगूर**, 1981 में **नमकीन** और **मीरा**, 1986 में **इजाज़त**, 1990 में **लेकिन**, 1993 में **लिबास**, 1996 में **माचिस** और 1999 में **हु तू तू** बनाई। उन्होंने अपनी फिल्मों में ज़िंदगी के विभिन्न रंगों को ब़खूबी पेश किया, भले ही वह रंग दुख का हो या फिर इंद्रधनुषी सपनों को समेटे खुशियों का रंग हो।

गुलज़ार ने छोटे पर्दे के दर्शकों के लिए 1988 में **मिर्ज़ा ग़ालिब** और 1993 में **किरदार** नामक टीवी धारावाहिक बनाए, जिन्हें बहुत पसंद किया गया। इसके बाद 1999 में जगजीत सिंह की

आवाज़ में **मरासिम,** 2001 में ग़ुलाम अली की आवाज़ में **विसाल** और फिर 2003 में **आबिदा सिंग्स कबीर** एल्बम निकाली। फिल्म मौसम में **दिल ढूंढता है फिर वही फ़ुर्सत के रात-दिन** जैसे गीत लिखने वाले गुलज़ार आज भी **बीडी जलाइले जिगर से पिया, कजरारे-कजरारे** जैसे गीत लिख रहे हैं, जिन पर क़दम खुद ब खुद थिरकने लगते हैं। गुलज़ार त्रिवेणी छंद के सृजक हैं। उनके दो त्रिवेणी संग्रह **त्रिवेणी** और **पुखराज** नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी अन्य कृतियों में **एक बूंद चांद, रावी पार, रात चांद और मैं, छैंया-छैंया, मेरा कुछ सामान** और **यार जुलाहे** शामिल हैं। गुलज़ार को 2002 में साहित्य अकादमी अवॉर्ड दिया गया। इसके बाद 2004 में उन्हें **पद्म भूषण** से नवाज़ा गया। इसके अलावा उन्हें **पांच राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार** और **19 फिल्म फेयर पुरस्कार** भी मिल चुके हैं। गुलज़ार की निजी ज़िंदगी में कई उतार-चढ़ाव आए। 1973 में उन्होंने अभिनेत्री राखी से शादी की। उनका रिश्ता लंबे अरसे तक नहीं चला। जब उनकी बेटी मेघना डेढ साल की थी, तभी वे अलग हो गए। मगर उन्होंने तलाक़ नहीं लिया। गुलज़ार मानते हैं कि कोई भी रिश्ता न तो कभी खत्म होता है, और न मरता है। शायद इसलिए ही उनका रिश्ता आज भी क़ायम है।

हाथ छूटे भी तो रिश्ते नहीं छोड़ा करते
वक़्त की शाख़ से लम्हे नहीं तोड़ा करते

वर्ष २००० मे शैलेन्द्र सम्मान समिति, रूड़की ने गुलजार जी को सम्मानित किया था और उस कार्यक्रम आयोजन सबीआरआई सभागार में किया गया था। मेरा ये सौभाग्य है कि मैंने ये शाम उनके साथ गुजारी। उस समय मुझे उनको एक कवि के रूप में सुनने का अवसर मिला। सचमुच उनके व्यक्तित्व व उनकी वाणी में एक सम्मोहन है जिसका प्रभाव आपके दिल व दिमाग पर लम्बे अन्तराल तक रहता है। आज भी उस शाम को याद करके मन रोमांचित हो जाता है। मेरी यही कामना है कि वे भारतीय सिनेमा की बगिया को इसी तरह गुलजार करते रहें।

चंद त्रिवेणियाँ

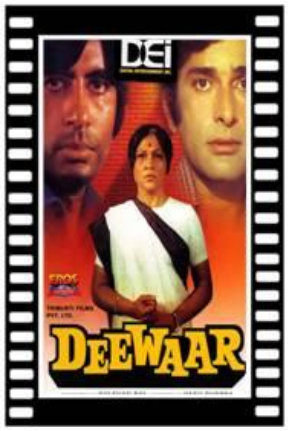

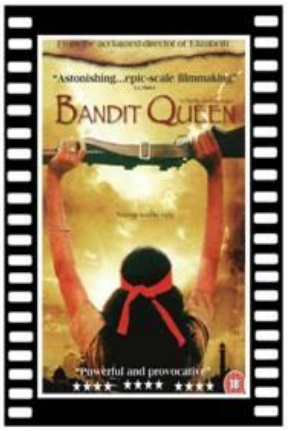

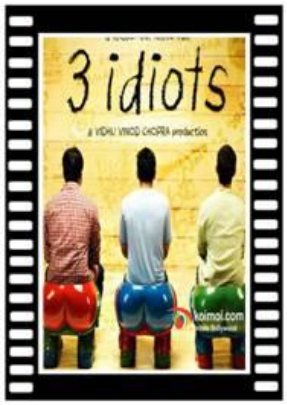

१.

ज़िन्दगी क्या है जान ने के लिए
ज़िंदा रहना बहुत ज़रूरी है
आज तक कोई भी रहा तो नहीं॥

२.

कांटेवाले तार पे किसने गीले कपडे टाँगे हैं
खून टपकता रहता है .और नाली में बह जाता है
क्यूँ उस फौजी की बेवा हर रोज़ ये वर्दी धोती है॥

३.

माँ ने दुआएं दी थी
एक चाँद सी दुल्हन की
आज फुटपाथ पे लेते हुए...ये चाँद मुझे रोटी
नज़र आता है॥

४.

चलो आज इंतज़ार ख़तम हुआ
चलो अब तुम मिल ही जाओगे
मौत का कोई फायदा तो हुआ॥

५.

मुझे आज कोई और न रंग लगाओ
पुराना लाल रंग अभी भी ताज़ा है
अरमानो का खून हुए जियादा दिन नहीं हुआ
है॥

६.

ये माना इस दौरान कुछ साल बीत गए हैं
फिर भी आँखों में चेहरा तुम्हारा समाया हुआ है
किताबों पर धुल जमने से कहानी कहाँ ख़तम
होती है॥

७.

उड़ के जाते हुए पंछी ने बस इतना ही देखा
देरतक हाथ हिलाती रही वहसाख फिजा में
अलविदा कहने को ? या पास बुलाने के लिए?

-

- *प्रदीप चौहान*

An Untold Story

- *Koushik Pandit*

I met Apu at the guest house for the first time. Aparajita's name was shortened to Apu by her friends. She used to be one of those not so much popular girls in college. Reasons behind it might be her ordinary appearance, her round-shaped thick glasses, or might be due to the fact that she was very studious and "hence boring". Boys thought she lives only in books and she was not meant to be loved by boys. When Krish, alias Krishnan came to know about this ill mentality of his boy classmates, he was disheartened. How sick these boys can be! Why don't they find the honesty in her simple looks, why can't they find those beautiful eyes of her behind those thick glasses, how one can just ignore those cute dimples on her cheeks when she smiles for even a bit... this list of "why" makes Krish to feel sorry for his buddies. Krish never thought that he would fall in love with Apu. But it was destined.

Initially he was also like other boys. But he began to take interest in Apu out of curiosity. It was those early days when both of them not used to talk with each other unless it was unavoidable. Krish used to observe her silently. Her calm nature, politeness in her voice, innocent looks, even her ignorance towards filthy bollywood songs when being played on canteen t.v. started to draw his attention. As days passed by, he began to notice very minute things like how she knots her hair, which day which coloured dress she wears and so on and started making decisions on things like in which outfit or hair-style she looks more beautiful, how she should react to a particular situation etc etc. Soon it became so much in volume that Krish started to take down notes in his small red diary. Every night before going to sleep, he used to write diary. Months later, the pages were filled with the sweet little memories of Apu observed by Krish. After finishing writing diary for the day, Krish used to make wish that someday he'll gift this diary to Apu and reading those pen-scribbled pages, she will start crying silently by keeping her head on his shoulder.

Days passed by, and they became the most seniors in college. It was placement time and everyone started to become serious about their career. Krish had stopped writing his diary thinking he would never be able to give that to Apu and the diary would be a painful thing for him to bear with. In last 3 years, Krish had thought many times to tell Apu about his feelings. But every time, something stuck up in his throat and he

landed upon with some messed up meaningless out of context sentences and Apu replied with a silent smile. That smile and those two dimples used to be the lifeline of Krish. He always thought maybe this is not the right time to tell her about his feelings. She is very studious and she might turn down to be in a relationship with him, considering it to be a distracting matter in her studies. On Valentine's Day, Krish used to see his classmates roaming in the campus, keeping hands in hands and sharing romantic words, but he used to calm his mind, saying these can be done after marriage. Why to worry about it now?

Soon last day of college came upon. It was the farewell day. Already Apu and Krish have placed themselves in good companies. But still now, no one has spoken of anything regarding their likes for each other. What if she turn down my proposal, what if she breaks our friendship and never talk to me back, what if she... Krish finally managed to overcome these questions from his mind and decided to tell Apu all the stuffs. But alas! He has lost his diary. He used to keep that in his cupboard. But today when he searched for it, it was not there! "God is so cruel! How can He do this injustice to me? What to do now?" With trembling legs, he stood in front of Apu. "I actually wanted to present you a gift before we leave college, but to my misfortune, I've lost that..." Krish continued, "Please forgive me, I couldn't give it to you." His eyes became wet. He could hardly see Apu's gloomy face although she was just in front of him. Suddenly Apu broke the silence with her soft, almost inaudible voice, "Are you looking for this?" Apu took out a rectangular object from her bag and handed it over to Krish. Emotions and adrenaline started flowing through his veins. Yes, it was his "lost" diary. "From where did you get this?" Apu couldn't hear his question. She said, "Well, your roommate Dev gave that diary to me last night!" "How insane!", Krish uttered. "Have you read all the pages?", Krish almost shouted. Apu gently held his hands and pressing them she said "Don't talk, let's have a walk." The sun sets behind as these two souls walk their down the memory lane.

INTROSPECTION

-RAJESH KUMAR

With the ever increasing pace of modern lifestyle, man, one of the most immaculate creations of God, is losing its identity. The fast pace of life has become the controlling thread & we are just left minimized to the state of puppets. The priorities have been rearranged. The ancient values of love, share and respect have been replaced by demons of lust, greed and dominance. The ultimate power of thought which distinguishes man from machines is getting wasted or rather being utilized in the wrong direction. Despite having a reasonable amount of wealth and possession, man in general is not happy. The happiness is lost somewhere. To add to it man is tensed, scared and frustrated to the utmost. The increasing instances of suicide and violence are prime evidence in support of the above fact.

Something is wrong and so we have to lift ourselves to take appropriate remedial measures. And in my view, **INTROSPECTION is the master key to unlock the doors of eternal happiness and self-satisfaction.** It refers to the self-observation of one's inner thoughts, desires and most importantly one's conscience. It is the first step towards the purification of soul. It is the need of the hour. We need to squeeze some precious time from our busy daily routine.

We need to minimize the egoism and optimize the philanthropism and altruism. I believe that the ones who are still sticking with me are in favour of the notion and so I urge them to devote ten precious minutes from their life on introspection. Before quitting our day, we can devote those ten minutes in analyzing some moralistic questions like: Have we made anyone happy today? Have we hurt anyone in order to satisfy our greed etc. Moreover can we make sure that flaws which we committed today will not be repeated tomorrow? These continual processes will in time reform us into a better human being & return ourselves the lost identity.

Some of you may still be in a dilemma that whether the process will work or not. For that I would like to remind you the famous quote:

"An attempt may fail, but there should not be a failure in attempts."

We need to take the initiative; we need to remember that God helps those who help themselves and others.

And finally, with a firm belief in God, I urge you all to follow the path of introspection.

Are you ready????

CBRI BUZZ....

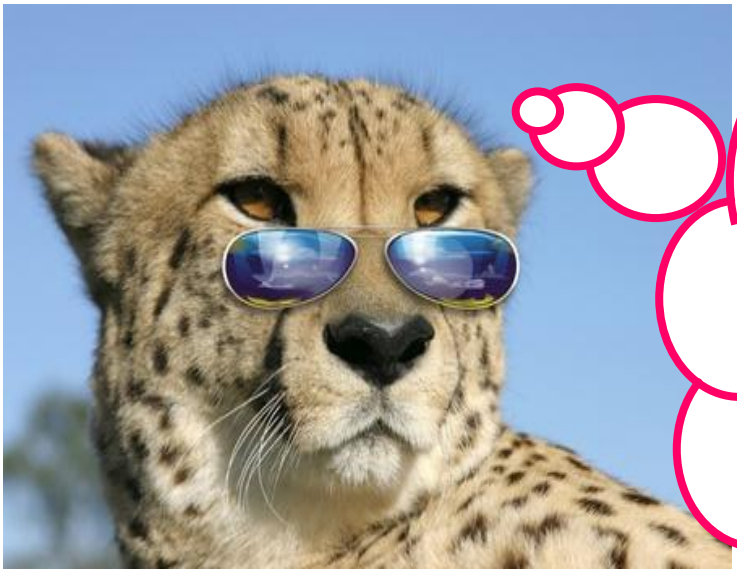

A lost Tendua (Indian Leopard) broke into CBRI colony campus at night for a surprise visit this Sunday (19.5.13). Sources said, it was probing into some complaints lodged against the night guards found sleeping during duty hours

PGRPE M.Tech final year students are complaining for not getting a farewell party either from juniors or from the seniors. They are thinking of not joining the phD courses here at the Same institute to get a real farewell party.....

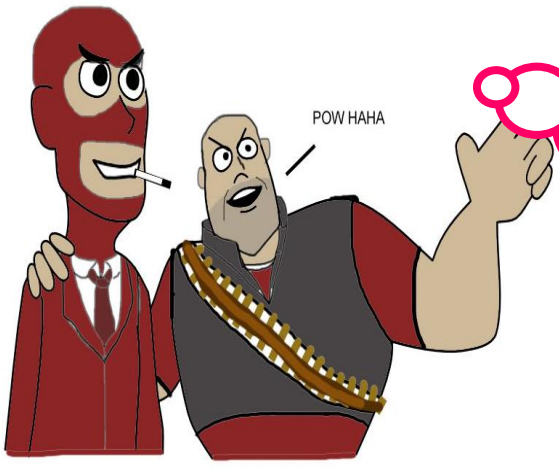

CSIR-CBRI strongly appeals to DG, CSIR to allow organizing lab to participate in all the games' final events of SSBMT without going through the qualifying rounds.... ....The appeal was made after CBRI sportsmen failed to qualify for any of the final rounds... (Sources: Fake news agency).

Release of Abhiwyakti 07...

Our thanks to :

Anindya, Monalisa, Riyaj , Rsmita,

Chief-Editor: Pradeep Chauhan

Editors: Randhir Bharat

Piyush Mohanty

Debdutta, Koushik & Riya